RECENT RESEARCHES in
SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES

Issue : 3 & 4, Vol. : 5,
July-December (2018), Joint Edition, Pages : 07 - 12
ISSN 2348 – 3318

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

भोटिया जनजाति की महिलाओं में पर्यावरण जागरूकता (रैणी ग्राम पंचायत के सन्दर्भ में)

किरण बाला

असि0 प्रोफेसर (समाजशास्त्र),
एस0एस0डी0पी0सी0 गर्ल्स (पी0जी0), कॉलेज, रूड़की

Received : 30/11/2018 *1st BPR* : 05/12/2018 *2nd BPR* : 12/12/2018 *Accepted* : 15/12/2018

ABSTRACT

भौगोलिक दृष्टिकोण से जनजातियाँ वनों के आस–पास निवास करती हैं। पर्यावरण जनजाति के जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन से इनका जीवन भी प्रभावित होता है। अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड के चमोली जनपद के रैणी ग्राम पंचायत को चुना गया है। रैणी ग्राम पंचायत में कुल 268 महिलाएँ हैं जिसमें से 50 सूचनादाताओं को दैव निदर्शन की लॉटरी प्रणाली से चुना गया है तथा संकलन हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकतर भोटिया जनजाति की महिलाएँ पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं। वे पर्यावरण के अर्थ को जानती हैं। प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं को यद्यपि वे शब्दशः न समझती हों, किन्तु भावार्थ स्पष्ट करने पर वे तुरन्त प्रत्युत्तर देती हैं।

की–वर्ड : भोटिया जनजाति, महिलाएं एवं पर्यावरण जागरूकता ।

पर्यावरण एवं मनुष्य का प्राचीन काल से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। किन्तु प्रारम्भ में जहाँ मनुष्य पर्यावरण के साथ सन्तुलन बनाकर जीवन यापन करता था, वहीं आज मनुष्य की प्रवृत्ति भोग एवं दोहन की हो गयी है। प्रारम्भ में प्रकृति के प्रति आस्था का भाव था, किन्तु आज विकास के नाम पर पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। जिसके दुष्परिणामों के रूप में पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव, प्राकृतिक आपदाएँ जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। चहुँओर पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए विश्व स्तर से लेकर स्थानीय स्तर तक चिन्तन किया जा रहा है। किसी भी समस्या को दूर करने के लिए उस विषय में जागरूक होना अति आवश्यक है।

प्रारम्भ से ही जनजनति एवं पर्यावरण का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। इनका जीवन प्रकृति पर ही निर्भर रहा है । जनजातियाँ विश्व के लगभग सभी भागों में रहती हैं। अफ्रीका के बाद भारत में सर्वाधिक जनजातीय आबादी है। ऐसा माना जाता है कि जनजातियाँ ही भारतीय प्रायद्वीप की मूल निवासी हैं। वैदिक महाकाव्य साहित्य तथा प्राचीन एवं मध्यकालीन सूचना स्रोतों में विभिन्न जनजातियाँ जैसे भील, कोल, किरात, किन्नर, मत्स्य, निषाद आदि का वर्णन मिलता है।[1] प्रारम्भ में जनजातियाँ सजातीय एवं आत्मनिर्भर ईकाई थी, किन्तु मुगलकाल में विभिन्न जनजातियों के अधिकारों का अपक्षरण हुआ। ब्रिटिश शासनकाल में भी जनजातीय क्षेत्रों में प्रवेश किया गया और ईसाई मिशनरियों के द्वारा धर्म व मानवता के नाम पर इन जनजातियों का धर्म परिवर्तन कराया गया[2]। इसके बाद भी जमींदार, राजस्व ने जनजातियों का शोषण किया जिस कारण उनकी पारंपरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रणाली पर विपरीत प्रभाव पड़ा।

जनजातियों का प्रकृति के साथ आत्मिक, भावनात्मक सम्बन्ध रहा है। विशेष रूप से भारत के सन्दर्भ में यदि देखें तो सन् 1901 की जनसंख्या रिपोर्ट में उन्हें प्रकृतिवादी कहा गया।[3] आजादी के बाद सभी जनजातियों को अनुसूचित जनजाति में शामिल किया गया। अनुच्छेद 341–342 के अर्न्तगत राष्ट्रपति के द्वारा आम सूचना के तहत अनुसूचित जनजाति को उल्लिखित किया जा सकता है। संसद किसी भी राज्य एवं संघ शासित क्षेत्र को किसी भी जनजातीय समुदाय में शामिल कर सकती है या निकाल सकती है।[4] सन् 2001 की जनगणना के अनुसार सभी राज्यों में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 84,326000 थी जो कुल जनसंख्या का 8.20 प्रतिशत थी।[5]

भौगोलिक दृष्टिकोण से जनजातियाँ वनों के आस–पास निवास करती हैं। पर्यावरण जनजाति के जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। पर्यावरण में हो रहे परिवर्तन से इनका जीवन भी प्रभावित होता है। प्रारम्भ में जनजातियाँ वन सम्पदा, जड़ी–बूटियाँ एकत्रित कर, पशुपालन का कार्य करते थे। ये वन सम्पदा का उपयोग करने के साथ–साथ इनका संवर्द्धन व संरक्षण भी करते हैं। जनजातियाँ भारतीय सभ्यता के अभिन्न अंग हैं। उनके पास सांस्कृतिक विरासत है। यह समय परिवर्तन के साथ सफल सिद्ध हुई। सन् 1952 में एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने आदिवासी संस्कृति के बारे में कहा था,

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 07-12, ISSN 2348 – 3318

किरण बाला

International Refereed & Blind Peer-Reviewed Multidisciplinary Research Journal

''मैं यह निश्चित रूप से नही कह सकता कि किनकी जीवनशैली बेहतर है, उनकी अथवा अपनी, परन्तु मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि कुछ बातों में वे हमसे बेहतर हैं। उनकी संस्कृति से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।''[6] नेहरू जी का मत था कि जनजातियों पर हमें कुछ भी थोंपना नही चाहिए ।

जनजातियों तथा प्राकृतिक संसाधनों जंगल, जल, भूमि के बीच के सम्बन्ध नीति–परिवर्तन के कारण क्षिन्न–भिन्न हुए हैं । उनके पारम्परिक अधिकार समाप्त हो रहे हैं। दस्तावेजों की कमी के कारण परम्परागत कब्जे की भूमि की नई वन नीति के तहत वन भूमि का दावा कर अर्जित कर ली गयी है। जिसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में जनजातियों को उनकी अपनी भूमि तथा वन भूमि पर अतिक्रमणकारी घोषित कर दिया जाता है। जनजातियाँ वनों तथा प्राकृतिक संसाधनों की परम्परागत रक्षक की भाँति कार्य करती थी।

उपहिमालयी क्षेत्र में मंगोल प्रजाति की जनजातियों का प्रतिनिधित्व है।[7] जून 1967 में उत्तर प्रदेश की पाँच आदिम जातियों (थारू, भोटिया, बोक्सा, राजी एवं जौनसारी) को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल किया गया। जिनका अधिकांश भाग उत्तराखण्ड में ही निवास करता है। जनजातियाँ वनों एवं पर्वतीय अंचलों में रहती है। ये प्रकृति के करीब रहती हैं। इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था होती है। यद्यपि वर्षों से ये वनों एवं पर्वतों में रहने के कारण सरकार के विशिष्ट प्रावधानों से लाभान्वित नहीं हो सके किन्तु यह भी सत्य है कि कई अर्थो में ये गैर–जनजातियों से भी अधिक जागरूक हैं।

भोटिया जनजाति मध्य हिमालय के उत्तराखण्ड राज्य की महत्वपूर्ण जनजाति है। गढ़वाल मण्ड़ल के चमोली जनपद में भोटिया जनजातियाँ निवास करती है। इन जनजाति का मुख्य व्यवसाय व्यापार तथा पशुपालन है। वर्तमान में जनजातीय समाज संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। पर्वतीय जनजातियाँ जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित कर रही हैं।[8] पर्यावरण जनजातीय जीवन का अभिन्न अंग है। ये जनजातियाँ वनों से जड़ी–बूटियाँ एकत्रित करके कम स्तर पर इनका व्यापार करती हैं तथा पशुपालन, छोटे कुटीर उद्योग जैसे कालीन बनाना, ऊनी वस्त्र बनाने से ही आजीविका उपार्जित करते हैं। प्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण से इनका गहरा सम्बन्ध है। एक ओर जहाँ पशुचारण क्षेत्र का सीमित होने, वन क्षेत्र पर प्रतिबन्ध लगने, नदियों पर जल विद्युत परियोजनाओं के बनने से परम्परागत प्राथमिक जल स्रोत समाप्त हो गये हैं, वहीं दूसरी ओर विस्थापन का दर्द भी उन्हें झेलना पड़ता है। मुआवजा इतना कम होता है कि किसी दूसरे स्थान पर घर बसाना उनके लिए मुश्किल हो जाता है। भ्रष्टाचार के कारण निर्धारित धनराशि भी उन तक नही पहुँच पाती। फलस्वरूप जनजातियों के व्यवसाय के साथ–साथ सामजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अध्ययन क्षेत्र में भी कमोवेश यही स्थिति बनी है। पर्यावरण में हो रहे असन्तुलन से इनका जीवन छिन्न–भिन्न हो गया है ।

अतः वर्तमान अध्ययन उत्तराखण्ड के चमोली जनपद के ग्राम पंचायत रैणी की भोटिया जनजाति की महिलाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पर आधारित है। रैणी गाँव चिपको आन्दोलन के कारण विश्व प्रसिद्ध है। इन्ही जनजातीय महिलाओं ने चिपको आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। भोटिया जनजाति के सामाजिक ढाँचे में महिलाओं पर ही घर की जिम्मेदारी होती है। प्रस्तुत अध्ययन में यह जानने का प्रयास किया गया है कि चिपको के 38 वर्षों बाद भी इस जनजाति की महिलाओं में पर्यावरण के प्रति जागरूकता है या नहीं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

जनजातीय महिलाएं एवं पर्यावरण विषय पर यद्यपि पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है किन्तु कुछ अध्ययन हुए है। जिसमे मुख्य निम्न है।

अमेरिकी लेखक 'रासेल कार्सन' ने अपनी पुस्तक 'साइलेन्ट स्प्रिंग' में स्पष्ट किया कि पर्यावरण प्रदूषण अत्याधिक खतरनाक स्थिति है। यह जीवन को और जटिल बनाता है। इस पुस्तक में पर्यावरणीय आन्दोलन के पारिस्थितिकीय पहलू को दर्शाया है कि महिलाओं ने वैश्विक एक पर्यावरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[9]

'वेरियर एल्विन' ने यह स्पष्ट किया कि दुनिया में आदिवासी / जनजातीय क्षेत्रों में ही पर्यावरण सुरक्षित है तथा वन अधिनियम का आदिवासी समुदाय पर विपरीत प्रभाव पड़ा है क्योंकि वन अधिनियम इनकी मूलभूत जरूरतों व भावनाओं की पूर्ति नही करता।[10]

'मारिया मीस' व 'वन्दना शिवा' ने 'इकोफेमिनिज्म' में यह विमर्श प्रस्तुत किया कि तृतीय विश्व देशों में महिलाएँ पारिस्थितिकी को बचाने के लिए संघर्ष करती हैं और पारिस्थितिकी सन्तुलन में महिलाओं की भूमिका की विवेचना की।[11]

'मिहिर कुमार राय' एवं अन्य ने वन संसाधन प्रबन्धन में सामुदायिक व्यक्तियों की भागीदारिता के स्तर का विश्लेषण किया कि ग्रामीण अंचलों में जंगल उगाने और पालने की वन्य गतिविधियों द्वारा रोजगार में वृद्धि तथा आय में वृद्धि की जा सके। इसके लिए ज्यादा संगठनात्मक समर्थन की जरूरत होगी जिसमें प्रशिक्षण, निवेश, सामाजिक और सामुदायिक सम्पत्ति का अधिकतम उपयोग सम्मिलित है।[12]

शोध प्ररचना :– प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णनात्मक शोध प्ररचना के माध्यम से जनजातीय महिलाओं में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन किया गया है। अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड के चमोली जनपद के रैणी ग्राम पंचायत को चुना गया है। रैणी ग्राम पंचायत

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 07-12, ISSN 2348 – 3318

में कुल 268 महिलाएँ हैं जिनमें से 18–46 आयुवर्ग की 168 महिलाएँ हैं जो कि अध्ययन का समग्र हैं जिसमें से 50 सूचनादाताओं को दैव निदर्शन की लॉटरी प्रणाली से चुना गया है तथा संकलन हेतु प्राथमिक तथा द्वितीयक तथ्यों का प्रयोग किया गया है।

पर्यावरण के अर्थ के विषय में जानकारी :–

पर्यावरण शाब्दिक रूप से परि तथा आवरण से मिलकर बना है जिसका अर्थ है चारो ओर का वातावरण। किन्तु व्यापक अर्थ में मनुष्य को चारो ओर से प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दशाएँ घेरे होती है जो मिलकर पर्यावरण का निर्माण करती हैं। पर्यावरण के अर्थ के विषय में भोटिया जनजाति की महिलाओं से जानकारी प्राप्त की गयी।

सारणी संख्या–1
पर्यावरण के अर्थ के विषय में जानकारी

क्रम.सं.	अर्थ	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पेड़–पौधे	05	10
2.	पेड़–पौधे, जीव जन्तु	07	14
3.	आस–पास का वातावरण	12	24
4.	उपरोक्त सभी	23	46
5.	जानकारी नहीं है	03	6
	योग	**50**	**100**

अतः सारणी सं. 1 से स्पष्ट होता है कि 10 प्रतिशत जनजातीय महिलाओं के अनुसार पेड–पौधे पर्यावरण हैं। 14 प्रतिशत सूचनादाता पेड–पौधें, जीव–जन्तु को पर्यावरण मानती हैं। जबकि 24 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार आसपास का वातावरण पर्यावरण होता है। 46 प्रतिशत भोटिया जनजाति की महिलाओं का मानना है कि पेड–पौधे, जीव–जन्तु, हमारे आस–पास का वातावरण सभी सम्मिलित रूप से हमारे पर्यावरण का निर्माण करते हैं। 6 प्रतिशत सूचनादाताओं को इस विषय में कोई भी जानकारी नही है।

वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण वह स्थिति है जिसमें पर्यावरण में कुछ ऐसे पदार्थों (ठोस, द्रव्य, गैस) के सम्मिलित होने से पर्यावरण का सन्तुलन बिगड जाता है।

वर्तमान में जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, नगरीकरण, वनोन्मूलन, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से जल, वायु, मृदा प्रदूषण उत्पन्न हो रहा है। अतः इस संदर्भ में जनजातीय महिलाओं में जागरूकता का स्तर जानने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या 2
वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण

क्रम.सं.	पर्यावरण प्रदूषण	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	45	90
2.	नहीं	00	00
3.	पता नहीं	05	10
	योग	**50**	**100**

अतः सारणी सं0 2 से ज्ञात होता है कि वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। यह एक समस्या है। इस विषय में 90 प्रतिशत सूचनादाताओं को जानकारी है। 10 प्रतिशत जनजातीय महिलाओं को इस विषय में कुछ भी ज्ञान नही है ।

उपभोक्तावादी संस्कृति से पर्यावरण को क्षतिः–प्रारम्भ में मनुष्य प्रकृति में आस्था रखता था और सन्तुलित ढ़ग से प्रकृति का उपयोग एवं संरक्षण करता था किन्तु उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण मनुष्य संसाधनों का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। बिना यह सोचे कि प्राकृतिक संसाधन सीमित मात्रा में हैं । अतः इस विषय में भोटिया जनजाति की महिलाओं से जानकारी प्राप्त की गई।

सारणी संख्या 3
उपभोक्तावादी संस्कृति से कारण पर्यावरण को क्षति

क्रम.सं.	क्षति	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	27	54
2.	नहीं	10	20
3.	पता नहीं	13	26
	योग	50	100

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 07-12, ISSN 2348 – 3318

उपरोक्त सारणी सख्यां 3 से स्पष्ट है कि 54 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार उपभोक्तावादी संस्कृति से पर्यावरण को हानि पहुंचती है तथा 20 प्रतिशत महिलाओं के अनुसार इस प्रवृत्ति से पर्यावरण प्रभावित नही होता जबकि 26 प्रतिशत को इस विषय में पता ही नहीं है ।

हिमालय की बर्फ का पिघलना

वातावरण के तापमान में वृद्धि होने से हिमालय की बर्फ पिघल रही है जो प्रमुख पर्यावरणीय समस्या है। ओजोन परत के क्षय तथा ग्रीन हाउस प्रभाव उत्पन्न होने से तापमान में वृद्धि होती है और इसके परिणाम स्वरूप ग्लेश्यिर तीव्र गति से पिघलने लगते है। पिछले 100 वर्षो से यह प्रक्रिया चल रही है। बर्फ पिघलने के कारण समुद्र के जल स्तर में वृद्धि होगी तथा तटीय क्षेत्र जलमग्न हो जायेंगे। अतः यह एक प्रमुख समस्या है। इस विषय में जनजातीय महिलाओं में जागरूकता को जानने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या 4
हिमालय की बर्फ का पिघलना

क्रम. सं.	बर्फ का पिघलना	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	48	96
2.	नहीं	00	00
3.	पता नहीं	02	4
	योग	**50**	**100**

अतः सारणी संख्या 4 से ज्ञात होता है कि 96 प्रतिशत सूचनादाताओ को इस परिघटना की जानकारी है कि हिमालय की बर्फ का पिघलना खतरा उत्पन्न करता है, यह एक समस्या है। जबकि 4 प्रतिशत जनजातीय महिलाओं को इस विषय में कोई जानकारी नही है ।

ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी को संकेत

वायुमण्डल में हॉनिकारक गैसों की मात्रा बढ़ने से तापमान में वृद्धि होती है। इसके कारण जलवायु में परिवर्तन होता है। सन् 1980 में जलवायु परिवर्तन को अर्न्तराष्ट्रीय समस्या के रूप में जाना जाने लगा। 90 के दशक में ग्लोबल वार्मिंग की ओर विश्व समुदाय का ध्यान आकर्षित हुआ। विश्व के औद्योगिक देश 80 प्रतिशत कार्बन डाइ–आक्साइड का उत्सर्जन करते हैं। यदि इस विषय में जागरूक न हुए तो ग्लोबल वार्मिंग से पृथ्वी का अस्तित्व संकट में पड़ सकता है। अतः इस विषय में जनजातीय महिलाओं की जागरूकता को जानने का प्रयत्न किया गया है।

सारणी संख्या 5
ग्लोबल वार्मिंग व जलवायु परिवर्तन से पृथ्वी का संकट

क्रम. सं.	पृथ्वी का संकट	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	हाँ	27	54
2.	नहीं	05	10
3.	पता नहीं	18	36
	योग	**50**	**100**

अतः सारणी सं 5 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 54 प्रतिशत जनजातीय महिलाओं को यह जानकारी है कि तापमान में वृद्धि, जलवायु परिवर्तन पृथ्वी के लिए संकट उत्पन्न करते हैं। 10 प्रतिशत महिलायें इससे असहमत हैं। 36 प्रतिशत महिलाओं को इस विषय में कोई भी जानकारी नहीं है।

लकड़ी के प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषण

लकड़ी के जलने से कार्बन डाइ–आक्साइड गैस उत्सर्जित होती है। जो अत्यन्त हॉनिकारक होती है। इससे वायु प्रदूषण के साथ ही स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें भी उत्पन्न होती है। ग्रामीण परिवेश में भोजन पकाने के लिए लकड़ी का ही प्रयोग किया जाता क्योंकि दूरी के कारण रसोई गैस घर तक पहुंचते–2 मंहगी पड़ती है।

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 07-12, ISSN 2348 – 3318

सारणी संख्या 6
लकड़ी के प्रयोग से पर्यावरण प्रदूषण

क्र.सं.	पर्यावरण प्रदूषण	आवृति	प्रतिशत
1.	हाँ	47	94
2.	नहीं	03	6
3.	पता नहीं	00	0
	योग	50	100

अतः सारणी से 6 से ज्ञात होता है कि 94 प्रतिशत जनजातीय महिलाओं का मानना है कि लकड़ी के प्रयोग से धुंआ निकलता है जो पर्यावरण के दृष्टिकोण से हॉनिकारक होता है। 6 प्रतिशत महिलाओं को इस विषय में कोई भी जानकारी नहीं है ।

निष्कर्ष एवं सुझाव :–

जनजातीय महिलाओं में पर्यावरण के विषय में जागरूकता सम्बन्धी अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकतर भोटिया जनजाति की महिलाएँ पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं । वे पर्यावरण के अर्थ को जानती हैं । वर्तमान समय की प्रमुख पर्यावरणीय समस्याएँ प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं को यद्यपि वे शब्दशः न समझती हों, किन्तु भावार्थ स्पष्ट करने पर वे तुरन्त प्रत्युत्तर देती हैं ।

भोटिया जनजाति की महिलाएँ मनुष्य की भोगवादी प्रवृत्ति को पर्यावरण का दुश्मन मानती हैं । उनका मानना है कि वर्तमान में यह प्रवृत्ति बढ़ रही है । जनजातीय महिलाएँ वनों के महत्व के विषय में भी जागरूक हैं, कि यदि लकड़ियों का अधिक प्रयोग होगा तो वायु प्रदूषण उत्पन्न होगा किन्तु उनका मानना है कि यदि उन्हें रसोई गैस सस्ते दामों पर मुहैया करायी जाये तो वे लकड़ी का प्रयोग कम करेंगी क्योंकि उनके घर तक रसोई गैस पहुंचते– पहुंचते अत्यधिक मंहगी पड़ती है व समय भी अधिक लगता है ।

अतः स्पष्ट है कि जनजातीय महिलाएँ पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं । यद्यपि वे पर्यावरण संबंधी तकनीकी शब्दों से अनभिज्ञ हों किन्तु अर्थ बताने पर वे इसके मूल अर्थ को जानती हैं। पर्यावरण में हो रहे असन्तुलन के प्रति भी जनजातीय महिलाएँ जागरूक हैं।

अतः महिलाएँ साक्षात्कार के दौरान यह भी सुझाव देती हैं कि –

- वन अधिनियम से उनके पारम्परिक हक–हकूकों को छीना गया है। वे सामुदायिक वनों की देखभाल कर उनके उपयोग के साथ उनका संवर्द्धन भी कर सकती हैं। किन्तु वन अधिनियम से उनके व्यापार, पशुपालन की गतिविधियों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।
- सरकार द्वारा ऊर्जा के अन्य स्रोत और ऊर्जा, गौबर गैस के माध्यम से घरेलू कार्यों के लिए कम लागत में ईंधन उपलब्ध कराया जा सकता है जिससे पर्यावरण भी संरक्षित रहेगा ।
- इसके अतिरिक्त नीति–निर्धारण की प्रक्रिया तथा क्रियान्वयन में इनकी सहभागिता को सुनिश्चित किया जाय ।
- गैर जनजातियों की तुलना में जनजातियों की महिलाओं में जागरूकता का स्तर अधिक है। पर्यावरण से उनका आत्मिक सम्बन्ध होने के कारण जनजातीय क्षेत्रों में पर्यावरण आज भी सुरक्षित है।

संन्दर्भ सूची

1– शर्मा, रूपचन्द्र, भारतीय जनजातियाँ, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 2003, पृ0सं0 1
2– वही, पृ0सं0 5
3– वही, पृ0सं0 7
4– बसु, डी0डी0, भारत का संविधान–एक परिचय, लोक्सिस नेक्सिस, बटरवर्थ वाडा, नागपुर, 2009, पृ0सं0 403
5– प्र0द0 समसामयिक वार्षिकी, 2014, वोल्यूम 1, पृ0सं0 160
6– शर्मा, रूपचन्द्र, पूर्वोक्त, पृ0सं0 197
7– वही, पृ0सं0 3
8– उप्रेती, हरीशचन्द्र, भारतीय जनजातियाँ : संरचना एवं विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000, पृ0सं0 101

RECENT RESEARCHES IN SOCIAL SCIENCES & HUMANITIES
Issue : 3 & 4, Vol. : 5, July - December (2018); Joint Edition, Pages : 07-12, ISSN 2348 – 3318

9– कार्सन, रासेल, साइलेन्ट स्प्रिंग,हाउटन मिफिन न्यूयार्कए 1962
10–एल्विन, वेरियर, द ट्रायबल वर्ड ऑफ वेरियर एल्विनः एन आटोबायोग्राफी, बोम्बे, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1964
11–मीस मारिया, शिवा वन्दना, इकोफोमिनिज्म, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 1993
12–रॉय मिहिर कुमार एट़ आल, पार्टिशिपेशन ऑफ फारेस्ट रिसोर्स मैनेजमेन्ट : ए केस ऑफ बांग्लादेश, जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेन्ट, वाल्यूम 24(3), हैदराबाद, 2005, पृ0सं0 331–352